

स्वविवेक पुं. (तत्.) 1. उचित और अनुचित या युक्त-अयुक्त का विचार कर कार्य करने की समझ, ज्ञान 2. व्यक्ति का अपने अनुकूल उचित-अनुचित का विचार करने की बुद्धि 3. अपनी सही समझ। discretion

स्वविवेकाधीन वि. (तत्.) जो अपनी समझ के अनुसार विहित हो। discretionary

स्वविवेकानुसार वि. (तत्.) अपने विवेक या उचित समझ के अनुसार।

स्वविषाक्तता स्त्री. (तत्.) चिकि. शरीर में पैदा हुए विषैले तत्वों या पदार्थों का शरीर में पुनः शोषण करने या होने की स्थिति।

स्वशासन पुं. (तत्.) 1. अपना शासन, अपना राज्य 2. अपने क्षेत्र में शासन व संपूर्ण व्यवस्था आदि स्वयं करने का पूर्ण अधिकार, स्वायत्त शासन। self government

स्वसंभूत वि. (तत्.) 1. जो अपने आप उत्पन्न हो 2. जो स्वयं से उत्पन्न हो, स्वयंभू।

स्वसंवेद्य वि. (तत्.) 1. जिसका संवेदन स्वयं के द्वारा करने योग्य हो 2. जिसका संवेदन स्वयं हो 3. जिस संवेदन को स्वयं अनुभव किया जा सके।

स्वसमुत्थ वि. (तत्.) जो अपने ही देश में उत्पन्न, स्थित या एकत्र होता हो जैसे- स्वसमुत्थ कोष।

स्वसा स्त्री. (तत्.) भगिनी, बहन।

स्वसित वि. (तत्.) अत्यधिक काला।

स्वसुर पुं. (तत्.) संबंध की दृष्टि से ससुर (पत्नी या पति का पिता)।

स्वस्त्ययन पुं. (तत्.) 1. किसी विशिष्ट मंगल कार्य के आरम्भ में सभी प्रकार के अशुभों व विघ्नों का नाश करके मांगलिक कार्य की विधिवत संपन्नता के लिए किया जाने वाला विशेष प्रकार का वैदिक मंत्रोच्चार 2. अनिष्टों के निवारण हेतु किया जाने वाला विशेष मंत्रों का पाठ 3. यजमान को दक्षिणा के पश्चात् आशीर्वाद के रूप में बोले जाने वाले विशेष मंत्र।

स्वस्ति अव्य. (तत्.) 1. आशीर्वादात्मक व मंगल कामना से प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द 2. कल्याण हो, मंगल हो (आशीर्वाद) 3. 'स्वीकृति' सूचक शब्द-मान्य है ठीक है स्त्री. 1. कल्याण, मंगल 2. ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक।

स्वस्तिक पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न '卐' जो शुभ अवसरों पर दीवारों, कागज-पत्र आदि में सिंदूर, हल्दी आदि से बनाया जाता है 2. एक प्रकार का मंगल द्रव्य जो विवाह आदि के समय भिगोए हुए चावल पीसकर तैयार किया जाता है 3. वस्तुशास्त्र के अनुसार वह घर जिसके पश्चिम में एक और पूर्व में दो दालान हो।

स्वस्तिका स्त्री. (तत्.) चमेली, एक पुष्पपादप।

स्वस्तिकृत पुं. (तत्.) शिव, महादेव वि. कल्याणकारक, मंगलकारी पुं. मंगलकारक।

स्वस्तिद वि. (तत्.) शिव का एक नाम।

स्वस्तिपाठ पुं. (तत्.) 1. विशेष शुभ अवसरों के प्रारंभ में या मंगल कार्य के शुभारंभ में सर्वप्रथम पुरोहितों/आचार्यों द्वारा किया जाने वाला कुछ निश्चित वेदमंत्रों का पाठ 2. स्वस्ति वाचन।

स्वस्तिमती स्त्री. (तत्.) 1. कार्तिकेय की एक मातृका 2. जो (स्त्री) कल्याणयुक्त हो वि. (पुं.) स्वस्तिमान।

स्वस्तिमान् वि. (तत्.) 1. कल्याण वाला 2. जो सभी प्रकार के सुखों से युक्त हो 3. भाग्यवान।

स्वस्तिमुख वि. (तत्.) जिसके मुख से सदा शुभकर व आशीर्वादात्मक वाणी निकलती हो पुं. 1. ब्राह्मण 2. राजाओं के स्तुति पाठक, बंदीजन।

स्वस्तिवाचक वि. (तत्.) 1. कल्याणवाचक 2. आशीर्वाद देने वाला (व्यक्ति) 3. स्वस्तिवाचन करने वाला कोई ब्राह्मण या व्यक्ति।

स्वस्तिवाचन पुं. (तत्.) 1. मंगल कार्यों के शुभारंभ के समय धार्मिक कृत्य के रूप में पुरोहित या आचार्य द्वारा किया जाने वाला कुछ निश्चित वेदमंत्रों का पाठ, स्वस्तिपाठ 2. पुष्प लेकर यजमान आदि को आशीर्वाद देने की एक समंत्रक विधि।